दामोदर स्वरूप 'विद्रोही'

समग्र

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

दामोदर स्वरूप 'विद्रोही'
समग्र

सम्पादक
विवेक विद्रोही
डॉ. प्रशान्त अग्निहोत्री

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना • SAMPLE

द्वारा प्रकाशित



अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

दामोदर स्वरूप 'विद्रोही' समग्र

संस्करण : 2021
© सम्पादक
ISBN: 978-93-90870-24-0

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

जे. यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

नमूना SAMPLE

दामोदर स्वरूप 'विद्रोही'



जन्म : 02 अक्टूबर 1928 अवसान : 11 मई सन् 2008

NOT SAMPLE

भूमिका

दादा विद्रोही जी का नाम मैं बचपन से ही सुनता रहा। जब मैं कक्षा 6 का विद्यार्थी था, तो विद्यालय के वार्षिकोत्सव में दादा विद्रोही जी, दादा विकल जी (इन दोनों कवियों में अनन्य भ्रातृत्व था) के साथ आये थे। तब कविता की समझ भले ही नहीं थी, पर उनकी कविता ने कविता के प्रति पहला सहज आकर्षण पैदा किया था। समय का चक्र अनवरत चलता रहा, मैं बड़ा हुआ और कविताएँ लिखने लगा। यह मेरे लेखन की शुरूआत का काल था। सन् 1995 की बात है, मैं नगर के गाँधी पुस्तकालय में काव्यपाठ के लिए गया, पहली बार मैं कवि के रूप में दादा विद्रोही जी के समक्ष था। उनकी अक्खड़ छवि और स्पष्टवादिता के खूब किस्से सुन चुका था। मन में उनके समक्ष काव्यपाठ को लेकर भय था। मैंने संस्कृतनिष्ठ शब्दों में कविता पढ़ी। जैसी आशंका थी, विद्रोही जी ने कहा कि इस कविता का अर्थ करने के लिए तो हम सब को होमवर्क करना पड़ेगा। कविता की ऐसी भाषा का क्या मतलब जो सहज समझ न आये। मैं हतोत्साहित हो गया। फिर कुछ दिनों बाद वे मुझे मिले और पूछा कि कुछ और लिखा, मैंने कहा कुछ कविताएँ। उन्होंने पूरे मनोयोग से कविताएँ सुनी। बहुत से सुझाव दिये, प्रशंसा की। फिर यह परिचय स्नेह में बदलता चला गया।

काव्य लेखन का क्रम चलता रहा। 'प्रवाह' ने आकार लिया और मैं मुख्य रूप से नवगीत लिखने लगा तब विद्रोही जी ने मुझे बहुत सराहना दी। जब कभी उनसे मिलने घर जाता तो कब घण्टों बीत जाते पता ही नहीं चलता। तब नगर में घण्टाघर से इधर और उधर के वैचारिक बँटवारे अस्तित्व में थे। घण्टाघर के उधर रहने वाले विद्रोही जी का अनन्य आशीष निरन्तर मुझे मिलता रहा। मैं और मेरे अग्रज कवि सुशील 'विचित्र' नियमित ही विकल जी और विद्रोही जी के साथ बैठते और साहित्यिक चर्चाएं करते थे। इस आत्मीयता का अनुमान इस बात से लगा सकते हैं कि यदि किसी बात पर सुशील 'विचित्र' नाराज (जो कि उनके स्वभाव की एक विशेषता है) हो जाते, तो दादा घर आकर उन्हें मनाते थे

SAMPLE

और मुझसे भी उलाहना देने के भाव में शिकायत करते थे।

सच में दादा विद्रोही जी का व्यक्तित्व 'नारिकेल' के समान था। ऊपर से कठोर, अन्दर से कोमल, सहज। सच को सच कहने का साहस उनमें था। अच्छी कविता की जहाँ वे खुलकर प्रशंसा करते थे, वहीं मात्र तुकबन्दी की निर्मम आलोचना।

कालजेता दादा विद्रोही जी के लिए भर्तृहरि का यह कथन 'जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वरः। नास्ति तेषां यशः काये जरामरणजं भयम्।।' (रससिद्ध कवियों का पंच भौतिक शरीर भले ही नष्ट हो जाए, पर उनका कीर्तिरूपी शरीर सदा स्थायी रहता है। उनके यशः देह को जन्म-मरण का भय नहीं होता।) अक्षरशः सत्य है। कवि दामोदर स्वरूप 'विद्रोही' का व्यक्तित्व एक बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न व्यक्तित्व है। उनके सृजन का आधार भले ही युग बोध हो, पर उनकी दृष्टि सर्वकालिक है। उनके काव्य में सृजन का स्वर बहुविषयक है, पर उसका प्रमुख स्वर राष्ट्र आराधन है। इसीलिए उनकी ख्याति एक राष्ट्रवादी कवि के रूप में समूचे राष्ट्र में हुई है। उनकी काव्यधारा में जीवन के शाश्वत मूल्यों, समकालीन परिवेश, परिस्थितियों और प्रश्नों की मुख्यधारा रही है। वहीं भावुकता, शृंगार, प्रेम, मानवीयता, शान्ति, विकलता, अध्यात्म, ओजस्विता, आक्रोश की विविध धारायें भी सम्मिलित रही हैं।

कवि विद्रोही की कविता में राष्ट्र की दासता की पीड़ा से लेकर स्वतंत्रता के बाद सपनों के टूटने, चीन युद्ध में हार के छलावे, शास्त्री जी की संदिग्ध मृत्यु के साथ सभी समकालीन प्रश्न स्वर पाते हैं। कवि विद्रोही के साहित्य से गुजरना सन् 1943 के गुलाम भारत से लेकर 21वीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशक के इतिहास से रूबरू होना है।

कवि दामोदर स्वरूप 'विद्रोही' का जन्म 02 अक्टूबर 1928 को कस्बा पुवायाँ के ग्राम मुड़िया पवार में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री मुरारी लाल गुप्त के घर हुआ था। माता श्रीमती देवकी एक धर्मनिष्ठ आध्यात्मिक महिला थीं। परिवार का विशुद्ध भारतीय वातावरण बालक की रग-रग में बचपन से ही रचने-बसने लगा था। परिवार में खद्दर का परिधान, महिलाओं द्वारा चरखा कातना और नवयुवकों के बीच अंग्रेजी शासन के विरुद्ध स्वर का गूँजना उनके परिवार का

सहज परिवेश था। ऐसे पारिवारिक परिवेश के आवेष्टन में बालक विद्रोही ने आँखें खोलीं। जब उनका जन्म हुआ तो उनका परिवार वैभव सम्पन्न था। पारिवारिक शक्कर के व्यवसाय में, पिता की स्वतंत्रता आन्दोलन में की जा रही सहभागिता के चलते, घाटा होने लगा। परिवार के समक्ष आर्थिक तंगी आ गयी पर इससे उनके पिता की राष्ट्रप्रेम की भावना पर कोई अन्तर नहीं पड़ा। पिता श्री मुरारी लाल क्रान्तिकारी अशफाक उल्ला खाँ के सहपाठी तथा पं0 राम प्रसाद 'बिस्मिल' के सखा होने के नाते क्रान्ति के कर्मठ नेता बने हुए मातृभूमि के रक्षार्थ विद्रोह का झण्डा बुलन्द किये घूमते रहे। माता देवकी ने माँ जीजाबाई की तरह अपने इस बाल शिवा को देशप्रेम की कहानियाँ और लोरियाँ सुनाई जिसका प्रभाव बालक के अन्तर्मन पर पड़ा और राष्ट्रप्रेम उनका संस्कार बन गया। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पिता और धर्मनिष्ठ माँ के संयुक्त संस्कारों ने बालक विद्रोही को बचपन से ही प्रखर राष्ट्रभक्त और एक ईमानदार व्यक्ति के रूप में तराशना शुरू किया। कच्ची उम्र से ही वे कविता लिखने लगे। नगर के चौराहों पर अंग्रेजों के विरुद्ध बालमुख से आग्नेय कविताएँ सुनकर लोग उन्हें विद्रोही बालक कहने लगे। यही नाम दामोदर स्वरूप की अप्रतिम पहचान बन गया। विद्रोही जी के साहित्य पर अनुसंधान करने वाले अनुसंधानकर्त्ता डॉ. आदर्श श्रीवास्तव लिखते है, ''विद्रोही उनका उपनाम ही नहीं, अध्यवसाय से उपार्जित एक चारित्रिक वैशिष्ट्य भी है, जिसके कारण वे एक समर्थ जनकवि की भूमिका निभाते रहे। वे जनता के मूक मनोभावों के प्रचण्ड उद्घोषक हैं। चाहे आपातकाल हो, चाहे सामान्य स्थिति, कविता के साथ समझौता विद्रोही जी को पसन्द नहीं। विद्रोही के व्यक्तित्व पर एक नहीं कई महान हस्तियों का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है- सन्त गुरूनानक, महाराणा प्रताप, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महामना मदनमोहन मालवीय, स्वामी विवेकानन्द, लालबहादुर शास्त्री, पंडित रामप्रसाद 'बिस्मिल', अशफ़ाक उल्ला खाँ आदि।''

सहजता और सादगी के साथ अक्खड़पन, पूर्वाग्रहों से निर्लिप्तता, ग्राम्य अनुभूतियाँ, धार्मिक संस्कार, निष्पक्षता, राजनैतिक चेतना, धैर्य, विनम्रता आदि व्यक्तित्व विशेषताओं से मुखरित विद्रोही की विद्रोहात्मक कविता की यह भावनायें पूर्व पीठिका हैं। मानव मात्र की समानता, भेद-भावों के प्रति रोष जो कि मानवीय

समाज में दरारें पैदा करता है, के विरुद्ध विद्रोही की कविताएँ खड़ी दिखाई देती हैं। मात्र चौदह वर्ष की आयु में ही दामोदर स्वरूप 'विद्रोही' अपने विचारों को कविता के रूप में अभिव्यक्ति देने लगे थे। विद्यार्थी जीवन से ही समर्पित राष्ट्रवादी चेतना के साथ उनकी कविता अंग्रेजी शासन के विरुद्ध हर गली चौराहे पर बिगुल फूँक रही थी। गुलाम भारत से लेकर समकाल तक उनकी साहित्यिक साधना का एक सुदीर्घ काल हमारे समक्ष उपस्थिति होता है। जहाँ एक ओर उन्होंने ओज की लम्बी कविताओं का सृजन किया है, वहीं गीत, ग़ज़ल, मुक्तक, छन्द और मुक्त छन्द कविताएँ भी उनके काव्य सामर्थ्य को हमारे सामने प्रकट करती हैं। उनकी प्रमुख प्रकाशित रचनाएँ- 'गुलाम शैशव', 'दिल्ली की गद्दी! सावधान', 'समय के दस्तावेज', 'मेरे श्रद्धेय', 'हार हमारी जीत तुम्हारी', 'त्रिधारा' और आत्मकथा 'दीवार के साये में' हैं।

उनकी कविताओं में जहाँ सोये हुए राष्ट्र को जगाने का स्वर है, वहीं बलिदान के पथ पर चलने की प्रेरणा भी है। 'दिल्ली की गद्दी! सावधान' उनकी महान काव्य कृति है, जो उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करती है। वे वस्तुतः एक यथार्थ राष्ट्र प्रहरी हैं, उनकी कविता में ओज का स्वर, उनकी सम्पदा, उनका वैभव और उत्साह है। भाषा के स्तर पर जहाँ उनके काव्य में तत्सम शब्दों का दर्शन होता है, वहीं उर्दू, अरबी, फारसी और देशज शब्दों का भी प्रयोग दिखाई देता है। शब्द संयोजन में कवि विद्रोही सावधान हैं। उनकी कविता में सप्रयास अलंकार नहीं दिखाई देता। जहाँ कहीं भी यह अलंकार अभिव्यक्त हुआ है, वहाँ वह सहज भाव रूप में अभिव्यक्त है। उनकी कविता में बिम्बों का सुन्दर प्रयोग दिखाई देता है। बिम्बों की यह अभिव्यक्ति सूक्ष्म योजना के रूप में काव्य के प्रदेय में उभरी है। उनके काव्य में आग आन्तरिक पीड़ा का प्रतीक है, तो रोशनी अन्धकार को चीरकर राह दिखाती मशाल का। उनकी कविता अन्याय, पाप, शोषण, दलन और वैषम्य के ख़िलाफ डटकर खड़ी दिखाई देती है। वस्तुतः यदि हम उनकी कविता पर दृष्टिपात करें तो हमें लगेगा कि वह मंच से जनसंवाद का सशक्त माध्यम है। भारतीय हिन्दी काव्य मंचों पर विद्रोही जी की छवि अव्यवस्था के विरुद्ध खड़े कवि के रूप में रही है। इस रूप में वे अपनी कविता में जनजागरण का शंखनाद करते और राष्ट्र कल्याण के मंत्र

पढ़ते दिखाई देते हैं। कवि विद्रोही स्वयं लिखते हैं कि 'वह कवि नहीं जिसमें राष्ट्रप्रेम, चिंतन और संवेदना का अभाव है।' वे मानते हैं कि साहित्य मात्र वाणी विलास या मनोरंजन की वस्तु नहीं, अपितु वह सामाजिक, वैचारिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम है। देश के संक्रमणशील वातावरण में जब परम्परागत मान्यताएँ छिन्न-भिन्न होकर नवीन मूल्यों अथवा आधुनिकता के व्यापक परिवेश में ढल रही हैं तो ऐसे वातावरण में काव्य एक सशक्त धारा के रूप में प्राचीन-अर्वाचीन के बीच प्रवहमान है। उनकी कविता सदैव एक सशक्त सम्पन्न भारत का सपना संजोती रही है।

काव्य मंचों का यह राष्ट्रवादी 'विद्रोही' स्वर 11 मई सन् 2008 को लगभग 80 वर्ष की आयु में चिरनिद्रा में विलीन हो गया पर उनका साहित्य युगों-युगों तक भारत के पौरुष को जगाने का कार्य करता रहेगा।

जब दादा विद्रोही जी की साहित्यिक यात्रा को एक पुस्तक की जिल्द में समेटने का निर्णय उनके पुत्र आदरणीय विवेक विद्रोही ने लिया और मुझे उसका दायित्व दिया, तो मेरे लिए यह सौभाग्य का विषय था। यद्यपि इस पुस्तक में उनका समग्र कृतित्व सम्मिलित नहीं हो पाया है, परन्तु इसमें उनकी समग्र साहित्यिक यात्रा के प्रमुख अंशों को शामिल करने का भरसक प्रयत्न किया गया। काल की उथल-पुथल के बीच उनकी अधिकांश चित्र छवियाँ और पत्र आदि नष्ट हो गये, पर जो बच रहे, वह इस ग्रन्थ में संकलित हैं।

यह प्रयास दादा विद्रोही की स्मृतियों को पुनः संजोने का एक प्रयास है। इसे आपका स्नेह मिलेगा।

मकर संक्रान्ति
14 जनवरी, 2021

डॉ. प्रशान्त अग्निहोत्री

SAMPLE

अनुक्रम

भूमिका - डॉ. प्रशान्त अग्निहोत्री 6

स्मरण

मेरे पिता.... (एक भावनात्मक श्रद्धांजलि) - विवेक विद्रोही 17
'विद्रोही' एक तेजस्वी कवि - महाकवि पं. श्याम नारायण पाण्डेय 20
हमारी पीढ़ी का नजरुल इस्लाम - पदम्श्री गोपालदास 'नीरज' 22
अग्निबाण 'विद्रोही' - भारत भूषण 23
कौन से शब्द दे के सम्मानूं? - डॉ. उर्मिलेश 25
आग्नेय कवि 'विद्रोही' - धर्मपाल अवस्थी 27
दामोदर स्वरूप 'विद्रोही'- काव्य व्यक्तित्व के दायरे में - डॉ. कुँअर बेचैन 31
मैं लिख न सका कुछ रिसालों के वास्ते - उदय प्रताप सिंह 34
राष्ट्रहित का गायक- 'विद्रोही' - डॉ. सोम ठाकुर 36
'विद्रोही' तो हर युग में एकाध रहा है - शिव बाबू मिश्रा 37
सुकुमार गीतों का भी गायक - राजबहादुर 'विकल' 41
दामोदर स्वरूप 'विद्रोही' और साहित्य - डॉ. सूर्य प्रकाश मिश्र 45
'विद्रोही' : विद्रोही स्वरों का उद्गाता - प्रो. (डॉ.) शशि तिवारी 56
मेरे बड़े भैया - प्रमिला गंगल 58
आग्नेय चेतना के साकार स्वरूप कविवर 'विद्रोही' - डॉ. शिव ओम अम्बर 62
पराई शर्त पर जो खुद से समझौता नहीं करते - डॉ. मदनलाल वर्मा 'क्रान्त' 65
अग्निधर्मा कवि-दामोदर स्वरूप 'विद्रोही' - सुशील दीक्षित 'विचित्र' 69

कविता

नाम-परिचय 75
दिल्ली की गद्दी सावधान 76
चन्द सवालात भारत की सरकार से 87
श्रम का गौरव 93
शान्ति-दूत के नाम 100
ताशकन्द समझौते के दावेदारों के नाम 103
वचन का वास्ता 109
आजाद वतन की तस्वीर 115
राष्ट्र की चेतना के नाम 121
स्वर की निरर्थकता 123

SAMPLE

जब तुम्हारे बीच 'विद्रोही' नहीं होगा 127
आजादी का तराना 130
कर्त्तव्य देश के वीरों का 132
स्वराज्य कैसे पाएँ? 134
नहीं पहले-सा आज बसन्त 137
देश के तरुण चलो बंगाल 141
विराट एशिया और पश्चिम का वैज्ञानिक 144
सीमा पर दुश्मन ने ललकारा है 150
वीरों खुद बढ़ना होगा 155
अब न पाकिस्तान नक्शे पर रहेगा 156
भारत-पाक-युद्ध-आचरण 162
कोटि पैसठ भारती हैं साथ में 167
फर्जी नेताओं के नाम 169
धरा का गीत 173
गीत गाने का अभी मौसम नहीं है 175
बापू की तस्वीर 184
कलमकारों के नाम 186
मुकुट एक, सिर हैं बहुतेरे 188
क्रान्ति के अंकुर 190
कश्मीर नहीं देंगे 191
उठ-उठ भारत के नौजवान 195
भारत की प्राण रेखा है हिन्दुत्व की वाणी 197
तुम पाञ्जन्य हो कुरूक्षेत्र के 199
हिन्दू है एक रक्तबीज कभी मर नहीं सकता 201
कश्मीर समस्या का विकल्प है घमासान 203
कवि का यह कथन याद रखना, मंजिल आसान नहीं होगी 206
गुरु-पुत्रों का बलिदान 209
ऐसे राही बने 218
स्वामी विवेकानन्द 220
छत्रपति शिवाजी 222
शहीद कन्हैया लाल शुक्ल 224
दो हाथों वाला मानव 226

SAMPLE

पं. दीनदयाल उपाध्याय 232
ईश्वर के राजदूत 235

गीत

नभ के देवता 243
आँसू का संसार हमारा 244
सफल साधना है 246
वंदन स्वीकारो 248
किंतु मेरी साधना में ही कमी थी 250
तुम चाहो पहिचान बना लो 252
मेरी पूजा को ठुकराया 254
मुस्कुराता जा रहा हूँ 256
कोई नहीं सहारा 258
नहीं मिल पाया तेरा प्यार 260
पपीहा रटता ही रह गया 262
हार हमारी जीत तुम्हारी 264
नींद आई नहीं है 266
बाती का दर्द 267
मुझे अभी गा लेने दो 268
मेरा टूटा साज रे 270
सितारा मिला ज्यों 271
ऐसा मोहक दर्पण पाया 273
मिलन के क्षण 274
घिरी बदरिया रे 275
अभी अरमान कुआँरे हैं 277
क्या तुमने दीप जलाया? 279
तेरी नगरी छोड़ चला हूँ 281
प्रेम नगर में रहना सीखो 283
मेरे मन का क्रंदन मिल पाता 285
मुझे रहने नहीं देती 287
वीणा के तार 289

SAMPLE

ग़ज़ल
एक पल प्यार से 293
कुछ लोग जी रहे हैं यों 294
सह चुका क्या शेष सहने के लिए 295
हम कहाँ थे कहाँ आ गए 296
खाली तुम्हारे द्वार से 297
था सन्दली शबाब ये 298
जाने क्यों मेरे नाम से 299
मैंने जो अगर कोई 300
मुक्तक 301
छन्द
वीणा वंदना 317
भारतेंदु 317
नेता जी सुभाष का आह्वान 318
देश को रुला के 319
वायु-पुत्र सम सिंध पार 320
भूतनाथ का सा रूप धर के 321
जनता बनाम नेता 322
जन्म से विदाई तक 327
हिन्दी नागरी 329
विविध लेख
खाक हासिल हो लुत्फ़े आज़ादी जहनियत जब गुलाम हो जाये? 333
कवि सम्मेलन-अब तक की यात्रा 338
राष्ट्र-मन्दिर की सुरक्षा में शहीद होने वाला व्यक्ति किसी देवता से 345
सर्वजीत बनाम अफज़ल 348
पत्र 351
स्मृति चित्र 363

SAMPLE

स्मरण

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

मेरे पिता....

एक भावनात्मक श्रद्धांजलि

विवेक विद्रोही

शाहजहाँपुर

पूज्य पिताश्री कीर्तिशेष श्री दामोदर स्वरूप 'विद्रोही' जी के प्रतिष्ठित परिवार में मेरा जन्म हुआ था। परिवार में प्रथम पुत्र होने के नाते मेरा लालन-पालन अत्यधिक लाड़-प्यार से हुआ था। मेरे जन्म होने के कुछ माह बाद ही पापा जी ठेकेदारी कार्य के सिलसिले में जोशीमठ चले गये थे। लगभग 10 महीनों के बाद सन् 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया था तब वे वापस अपने गृहनगर शाहजहाँपुर आ गये। उसके बाद धीरे-धीरे उनका रुझान कवि सम्मेलनों की तरफ हो गया। राष्ट्रभक्ति की रचनायें तो वे अपनी प्रारम्भिक शिक्षा के समय से ही लिखने लगे थे। अपनी राष्ट्रभक्ति कविताओं के कारण शीघ्र ही हिन्दी के मंचों पर छा गये। उनकी वजह से मेरे घर का वातावरण भी राष्ट्रभक्ति व साहित्यिक हो गया। मुझे भी पापा अपने साथ कभी-कभी कवि सम्मेलनों में बाहर ले जाते थे। बाहर के मंचों पर मैंने पापा को लगातार तीन-चार घण्टे तक कविता पाठ करते हुए सुना। इस कारण मुझे भी कविता सुनने का शौक लग गया और मैं भी शाहजहाँपुर में होने वाले प्रत्येक कवि सम्मेलनों में कविताओं का आनन्द लेने लगा। हमारे नगर शाहजहाँपुर में भारत के सभी सुप्रसिद्ध कवि, कवि सम्मेलनों में (पापा द्वारा आयोजित) कविता पाठ करने के लिये आये हैं। राष्ट्रीय कवि श्री रामधारी दिनकर व डॉ0 हरिवंशराय बच्चन जी शाहजहाँपुर की क्रान्तिकारी धरती पर किन्हीं कारणोवश नहीं आ पाये।

अपनी कवि सम्मेलनों की व्यस्तताओं की वजह से वे हम चारों भाई-बहनों पर विशेष ध्यान नहीं दे पाते थे। एक महीने में लगभग 20 दिन वे कवि सम्मेलनों में व्यस्त रहते थे। हम भाई-बहनों की नाराजगी हमेशा पैसों से या व्यक्तिगत डिमाण्ड से पूरी होती थी। वे हम सभी भाई-बहनों को अत्यधिक प्यार करते थे। लेकिन उनके क्रोधी स्वभाव होने के कारण सभी लोग उनसे डरते भी बहुत थे।

नमूना SAMPLE

उनके क्रोधी स्वभाव के बावजूद उनके हृदय में एक अत्यन्त कोमल व्यक्ति था। वे बहुत भावुक थे। एक मिनट के क्रोध के बाद तुरन्त ही सामान्य हो जाते थे। मेरे विवाह के उपरान्त जब मेरे परिवार में प्रथम पुत्री का जन्म हुआ, तो वे अत्यन्त निराश हो गये क्योंकि उनकी इच्छा थी कि प्रथम पुत्र हो। लेकिन ऐसा हो न सका। वे पुत्री के जन्म के तीन-चार दिन तक उसको देखने के लिए अस्पताल तक नहीं गये। अस्पताल से घर आने के बाद उसको अपने गोद में उठाकर सारे मुहल्ले में घूमा करते थे। उस बेटी को बहुत ज्यादा प्यार करते थे। उनका क्रोधी स्वभाव भी मेरे विवाह उपरान्त धीरे-धीरे कम होता चला गया। सन् 1986 में उनको जब हृदयघात हुआ। उसके बाद उन्होंने कवि सम्मेलनों में जाना लगभग बन्द कर दिया था। एक बार उनकी अस्वस्थता के दौरान तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव जी मेरे निवास पर आये थे। उस समय श्री यादव जी ने तत्कालीन जिलाधिकारी से पूछा कि क्या आप 'विद्रोही' जी को जानते हैं। उनके 'न' कहने पर उन्होंने उनको बोला कि आप को इस जिले में रहने का कोई हक नहीं, जब आप विद्रोही जी को नहीं जानते। आप अपना तुरन्त ट्रांसफर कहीं और करा लो। जिलाधिकारी महोदय अगले दिन ही मेरे निवास पर आये और पापा से उनका स्वास्थ्य पूछा और आश्वासन दे गये कि आप मुझे कभी भी फोन कर बुला सकते हैं।

पापा (विद्रोही जी) अपने घर के बँटवारे से अत्यधिक निराश थे। उनके सर्वप्रिय भाई श्री देवेन्द्र कुमार गुप्ता जी ने घर के आँगन के बीच लगभग 40 फिट ऊँची एक दीवार खड़ी करवा दी। जिसकी वजह से हमारे घर में सामान्य रोशनी व हवा का अभाव हो गया। पापा अस्थमा के मरीज थे। हवा न मिल पाने के कारण वो अपनी कुर्सी सड़क पर डाल कर बैठा करते थे। यह कृत्य उनके उस सर्वप्रिय भाई ने किया था जिसको वो मुझसे भी ज्यादा चाहते थे। उनकी पढ़ाई कराने के बाद ओ.सी.एफ. (आर्डनेन्स क्लोदिंग फैक्ट्री, शाहजहाँपुर) के तत्कालीन महाप्रबन्धक श्री एस.एन. गुप्ता जी से व्यक्तिगत सम्बन्धों के कारण उनके माध्यम से अपने भाई को नौकरी दिलवायी। उसके बाद उनके पूरे परिवार को समय-समय पर अपना संरक्षण प्रदान करते रहे। इस घटना से वे इतना मर्माहत थे कि पापा ने उनके इस कृत्य को अपनी एक पुस्तक अपनी आत्मकथा

'दीवार के साये में' के रूप में लिखा है। अपने घर से अत्यधिक लगाव के कारण ही वे कभी भी शाहजहाँपुर छोड़कर बाहर न जा सके। जिस कारण उनकी योग्यता का सही आंकलन भी न हो पाया। उनको इस नगर से वह सब नहीं मिला सका, जिसके वे वास्तविक हकदार थे। मेरे परिवार के साथ अत्यधिक लगाव के कारण ही उन्होंने मुझे कहीं भी लगकर नौकरी नहीं करने दी। उनके निधन के पश्चात् ही उनकी योग्यता व उनके कृतित्व का सही-सही आंकलन हुआ। उनकी शवयात्रा में नगर का प्रत्येक प्रतिष्ठित व्यक्ति, चाहे वो साहित्यकार हो या राजनैतिक व्यक्ति या समाज से जुड़ा हुआ छोटा-बड़ा व्यक्ति हो, शामिल था।

मैंने सोचा एक ऐसे व्यक्तित्व के धनी व साहित्य के पुरोधा व्यक्ति जिसकी वजह से आज भी शाहजहाँपुर को साहित्य के क्षेत्र में पूरे देश में जाना जाता है; ऐसे व्यक्ति की नगर में एक प्रतिमा अवश्य लगनी चाहिए। मैंने अपने स्वयं के अथक प्रयासों से उत्तर प्रदेश शासन से निवेदन किया और लगभग सात वर्षों में मुझे अपने मिशन में सफलता मिली। 02 अक्टूबर 2020 को उनकी प्रतिमा नगर के मुख्य तिराहे पर लगाई गई और उस तिराहे को कवि तिराहा के नाम से सुशोभित कर दिया गया।

प्रतिमा स्थापना के समय से ही मैंने पूज्य पिता जी की सभी प्रकाशित तथा अप्रकाशित साहित्य को संकलित कर एक सम्पूर्ण पुस्तक के रूप में प्रकाशित कराने का बीड़ा उठाया। अब वह पुस्तक भी हमारे मित्र डॉ. प्रशान्त अग्निहोत्री के अधिकतम सहयोग से आपके समक्ष आ रही है। इस पुस्तक के माध्यम से मैं अपने पूरे परिवार 'विद्रोही परिवार' की ओर से पूज्य पिता जी कीर्तिशेष श्री दामोदर स्वरूप 'विद्रोही' जी को यह भावनात्मक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

SAMPLE

'विद्रोही' एक तेजस्वी कवि

महाकवि पं. श्याम नारायण पाण्डेय
डुमराव, मऊनाथ भंजन, आजमगढ़

कविवर दामोदर स्वरूप 'विद्रोही' शाहजहाँपुर के निवासी नगर के सम्मान और अपने क्षेत्र के साहित्यकारों के अभिमान हैं। एक प्रतिष्ठित और सम्मानित कुल में जन्म लेकर समस्त देश को अपनी राष्ट्रीय और ओजस्वी कविताओं से भारतीय राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ा रहे हैं। विद्रोही जी की अन्तरात्मा जिस जनहित बाधिका स्थिति को किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं कर पाती उस पर बड़ी निर्भीकता से आक्रमण कर बैठते हैं। उनके कथन में इतनी तीव्रता और निर्भयता है कि लोग आश्चर्य से एक दूसरे का मुंह देखने लगते हैं। साथ ही हर्षध्वनि से जय-जयकार कर उठते हैं। लोग सरकार और समाज के भय से जिस बात का अनुभव कर कुछ कह नहीं पाते वही बात मंच से ललकार की वाणी में सुनकर विह्वल हो उठते हैं। तरुण तो तरुण, बूढ़े भी मूंछों पर ताव देने लगते हैं। ऐसे निडर कवि बहुत कम देखे व सुने जाते हैं। मंच पर अपनी विशेषता कायम करने के लिए कभी प्रयास नहीं किया वरन् अनायास ही सबसे अलग विद्रोही जी की विशिष्टता कायम होती चली जा रही है।

आज कल मंचों से जिस तरह की रचनाएं सुनाई जा रही हैं, उनसे मात्र क्षण भर के मनोरंजन के सिवा कुछ भी नहीं मिलता। रात्रि जागरण के बाद आलस्य लेकर ही श्रोता घर लौटता है। देखता हूँ, आजकल मंच पर बैठे मन्त्री व साहित्यिक मनीषी भी कोई शाश्वत कविता सुनकर उतने प्रसन्न नहीं होते जितना चुटकले सुनकर खुश हो उठते हैं।

आने वाली पीढ़ी अनेक वादों के जाल में फंसकर हिरण की तरह छटपटा रही है, जाल काटने और स्वतन्त्र होने की शक्ति क्षीण हो गयी है। स्वतन्त्र पथ बनाकर साहित्य में विचरण करने की बुद्धि-क्षमता मारी गई है। अमृतरस की अपेक्षा, उन्हें शीरे का रस आनन्ददायक हो गया है।

साधारण कविता को गाकर मधुर कण्ठ से पढ़ने वाले चीखकर तथा फूहड़ हास्य की तुकबाजी सुनाने वाले वाह-वाही लूट रहे हैं। पारिश्रमिक सबसे अधिक और वहीं मनीषी कवि को जिसे नाचना-गाना तथा मनोरंजक भाषण नहीं आता मार्ग व्यय से अधिक कुछ नहीं प्राप्त होता और कागजी अभिनन्दन देकर चरण

SAMPLE

चुम्बन कर लिया जाता है। ऐसे वातावरण में विद्रोही जी की कविता सभी तरह के श्रोताओं को हँसाकर प्रखर राष्ट्रीयता का सन्देश देती है। मैं उन्हें युग-युग तक जीवित रह स्वस्थ जीवन का आशीर्वाद देता हूँ।

प्रतिवर्ष लाल किले पर आयोजित होने वाले कवि सम्मेलन में एक अवसर पर राष्ट्रकवि 'दिनकर' जी काव्य पाठ कर रहे थे। जनसमूह ऊब रहा था। बार-बार खतरे की घंटी बज रही थी, 'हटो-हटो' की गरजती आवाजें आ रही थीं और दिनकर जी मग्न होकर काव्यपाठ कर रहे थे, तभी कई पंजाबियों की ललकारती आवाज आई 'हटिए जनाब या हटाना पड़ेगा क्यों दिमाग चाट रहे हैं?' उदास मुख दिनकर मेरे पास आकर बैठ गए और बोले पाण्डेय जी कवि सम्मेलनों में कविता पढ़ना पाप है। जी चाहता है कि एक कागज पर 'कवि दिनकर' लिखकर पाँच जूते लगाऊँ। ऐसी ही कुछ हास्यास्पद घटना गीतों के जादूगर बच्चन के साथ हुई। ऐसे सर्वमान्य वारिष्ठ कवियों का हाल आँखों से देख चुका हूँ। सुमित्रानन्दन पंत एक बार माध्यमिक विद्यालय, वाराणसी के एक कवि सम्मेलन में कविता पढ़ रहे थे। उनकी कविता एक भोजपुरी कवि के आगे किसी ने नहीं सुनी और वह उठकर मंच से चले गए। अब और आगे मंच की क्या दशा होगी भगवान ही जाने।

आज जो अन्याय है, कल वह न्याय में परिवर्तित हो जाएगा। आज की विदाई हो जाएगी। कल उचित अनुचित और अनुचित उचित हो जाएगा। भ्रूण-हत्या कल तक अपराध समझी जाती थी, आज वैधानिक हो गयी है। जनसंख्या की वृद्धि के डर से या किसी कारण से सयानी कुमारी लड़कियों की रक्षा का भार पहले माँ-बाप पर था। अब वे ही क्लबों और चित्र मन्दिरों में अकेली छोड़ आते हैं। यह परिवर्तन सृष्टिकाल से चला आ रहा है। ऐसी हालत में आज की बिगड़ी स्थिति को ध्यान में रखकर लगातार रचनाकर्म अधिक श्रेयस्कर नहीं कहा जाएगा। समाजवाद को कविता का रूप देकर कवि बनने की लालसा छोड़नी पड़ेगी।

विद्रोही जी किसी सर्वमान्य अमर धीरोदात्त महापुरुष के बारे में अपनी दर्पपूर्ण शब्दावली से गरजते छन्दों में एक प्रबन्ध काव्य उपस्थित करें और साहित्य मन्दिर के शिखर पर अपनी कीर्ति का कलश चढ़ा दें और जमा दें अपनी साहित्य विदग्धता की धाक।

(श्री विद्रोही अभिनन्दन ग्रन्थ से)

हमारी पीढ़ी का नजरुल इस्लाम

पदमश्री गोपालदास 'नीरज'
जनकपुरी, मैरिस रोड

श्री दामोदर स्वरूप 'विद्रोही' का नाम आते ही भुजायें फड़क उठती हैं और आँखों में क्रोध की चिंगारियाँ निकलने लगती हैं। वे राष्ट्रीय चेतना के एक अत्यन्त प्रखर और तेजस्वी कवि हैं। उनकी कविताओं ने देश के अनेक युवा हृदयों को आन्दोलित किया है। उनके व्यक्तित्व में एक सहज जुझारूपन है जो अभी भी 73 वर्ष की उम्र में कायम है।

विद्रोही जी सचमुच ही अभिनन्दनीय है क्योंकि सत्य और न्याय के लिए पूर्ण निर्भीक उनकी तरह आवाज बुलन्द करने वाला कोई दूसरा कवि हमारी पीढ़ी में नहीं है। अन्याय, असत्य, अधर्म और अनाचार के खिलाफ अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा जिस प्रकार से उन्होंने जिहाद छेड़ी; वह आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उदाहरण बन कर रहेगी। उनका सही मूल्यांकन अभी तक इसलिये नहीं हो सका कि वे किसी का चाटुकार अपने को नहीं बना सके। इसी अन्याय की प्रतिक्रिया स्वरूप उनके व्यवहार में कभी-कभी रूक्षता दिखाई पड़ती है; लेकिन जिन लोगों को उनके साथ दो-चार दिन रहने का अवकाश मिला है, वे जानते हैं कि बाहर से कठोर और दम्भी दिखने वाले विद्रोही जी भीतर से कितने कोमल, कितने विनम्र और कितने स्नेहमय हैं। अपनी पीढ़ी के इस ''नजरुल इस्लाम'' का मैं हृदय से अभिनन्दन करता हूँ और उनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ।

SAMPLE

अग्निबाण 'विद्रोही'

भारत भूषण
मेरठ

जिस कवि की चेतना समाज की चेतना से जुड़ी होगी वह कवि सदा व्यवस्था के विरोध में बोलेगा। व्यवस्था कोई भी हो, वह स्वार्थों पर ही टिकी होगी। समाज को जगाने वाला उसके अनुकूल नहीं बोल सकेगा।

विद्रोही जी से मेरा सम्बन्ध लगभग 30-40 वर्ष का तो है ही। मंच पर आने के पाँच सात वर्ष बाद ही उनसे कहीं परिचय हो गया था जो आज तक अधिक से अधिक गहन होता चला आया है। विद्रोही ओज के सदेह रूप हैं। गाँधी जी की तपस्या, त्याग और राष्ट्रव्यापी चेतना ने देश को स्वतन्त्र कराया। सत्ता में आते ही लगभग सभी नेता कुछ वर्ष बाद ही सुविधाओं में, आराम में, और स्वार्थों में खोते जाते गये। यह सब ऐसे ही हुआ जैसे गौतम बुद्ध के निर्वाण के बाद बौद्ध धर्म का पतन होता चला गया। यह स्थिति विद्रोही जी से सहन नहीं हुई। उनकी लेखनी आग उगलने लगी। समाज में फैलती असमानता, निर्धन आदमी की साधनहीन व्यवस्था, नेताओं की बेईमानी, पूँजीपतियों की अनैतिक धन संग्रह की लालसा, विद्रोही की नींद उड़ाने लगी। क्या देश के शहीदों ने इसी स्थिति के लिए प्राण दिए थे? देश के हजारों जीवन क्या इसीलिए आजादी की बलिवेदी पर चढ़े थे? ऐसे ही प्रश्नों के उत्तर विद्रोही की हुंकार बनते चले गये और वे 'दिल्ली की गद्दी' को निर्भीक स्वरों में सावधान करने लगे।

अब यह तो स्मरण नहीं है कि कितने कार्यक्रमों में और कहाँ-कहाँ हम साथ रहे हैं लेकिन इतनी स्मृति तो है ही कि विद्रोही जी बहुत प्रेम और आग्रह से सुने जाते थे। अनकी अग्निबाण जैसी पंक्तियों पर पूरा पंडाल प्रशंसा और तालियों से गूँज उठता था। मैंने अकेले में उनकी प्रेमपरक रचनाएं भी सुनी हैं पर जनता में उनकी छवि ओज के कवि की ही आज बनी हुई है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद रक्त स्नान किया हुआ देश इन रचनाओं पर न्यौछावर था।

सहसा यह विश्वास नहीं हो रहा है कि विद्रोही जी 73 वर्ष के हो गये हैं पर मैं स्वयं भी इसी आयु सीमा में हूँ इसीलिए यह विश्वास करने को विवश भी